DEOLI DETENTION CAMP
CENSORED AND PASSED
Date 1/4/41
Superintendent.

XVII/2

Deoli Camp Jail,
Deoli Ajmer.

प्रिय प्रकाकान्त जी,

आपके पास मैंने पत्र भेजा था
शायद आपको मिला भी होगा। पर आपने मेरे पत्र का
जवाब भी न दिया। यह मेरी अपनी बदकिस्मती कहिये या
और कुछ ही बता सकते हैं। आपने नैनी से आते समय
बार २ कहा था कि पत्र जरूर देते रहियेगा, मैंने उसका
पालन भी किया। हां यह हो सकता है कि
पत्र मेरा मतलब से न्यारा रहा हो और शायद आप
ने मुझे एक मतलबी समझ
न दिया हो। मैंने आपको उन चीजों के लिये तो बहुत भी
को तकलीफ दिया है, इसके लिये क्षमा कीजियेगा।
मैं ऐसा नहीं हूँ, जैसा कि आप ख्याल की
तरह धारणा हो जाती है। आपने मुझे
बहुत ही उत्साहित किया था, और जो
बातें आपने मेरे साथ की हैं, उनके
लिये मैं आपको बड़ा कृतज्ञ हूँ और उस
भलाई को कभी भी न भूलूंगा।

II

माँ की तबियत खराब थी, सुन कर बड़ा दुःखी
हुआ। आप की भी तबियत खराब है, सुन कर
बहुत अफसोस हुआ। आप अपनी तन्दुरुस्ती का
उचित रूप से प्रबन्ध करें। मैं यहाँ से कुछ सेवा भी
तो नहीं कर सकता, इसके लिये दुःखी हूँ। यदि ईश्वर ने चाहा तो
हम अवश्य कभी न कभी कुछ दिनों में आज़ादी।
आप चिट्ठी नहीं लिखते [illegible] हैं। यही मेरी
एक शिकायत है। आज इतने दिन किस तरह
से कट रहे, यह तो मैं ही जानता हूँ। आप किसी
तरह भी [illegible] कि मैं [illegible] नहीं सोचता
हूँ। आपके [illegible] कुछ [illegible] मिलती
है, उनसे मैं [illegible] आजकल और [illegible]
अफसोस [illegible] है, कह नहीं सकता।
[illegible] आप कुशल-क्षेम हाल लिखते
रहिये [illegible] सचमुच ही कुछ प्रसन्न
होता हूँ [illegible] बात ही। मैं आपके पत्र का इन्तजार
करता रहूँगा। पत्र आने पर ही लिखूँगा।
[illegible] पत्र [illegible] ही [illegible] आपसे
कुछ कहना ही क्या है [illegible] में [illegible]
अब ही [illegible] हूँ। अब मैं [illegible] हूँ कि

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA